पुस्तक मेला : डीपीएस के छात्रों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया

संवाददाता, आसनसोल

युवा शिल्पी संसद व आसनसोल नगर निगम के सहयोग से स्थानीय पोलो ग्राउंड में आयोजित पुस्तक मेले में सोमवार को दिल्ली पब्लिक स्कूल के स्टूडेंट्सों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया. मेले के बीच में बने मंच पर उन्होंने विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुति की तथा दर्शकों की वाहवाही लूटी. ठंड होती शाम के बावजूद सैक ड़ों की संख्या में दर्शक मौजूद थे.

स्कूल की पूरी टीम में 40 स्टूडेंट्स शामिल थे. पूरे कार्यक्रम का संचालन स्कूली स्टूडेंट्स देवलीना व अरविंद ने संयुक्त रूप से किया. उन्होंने पूरे कार्यक्रम को छह इवेंट में बांट रखा था. प्रारंभ में प्रार्थना गीत पेश किया गया. सामूहिक गीत के कारण पूरा माहौल संगीतमय हो गया. इसके बाद संगीत नाटिका 'कृष्ण लीला' पेश की गयी. स्टूडेंट्सों की प्रस्तुति काफी प्रशंसनीय रही. सामूहिक नृत्य के बाद सोलो गायन का दौर शुरू हुआ. अपने मधुर गीतों से गायकों ने समां बांध दी. अंग्रेजी में 'वी आर द बेस्ट' गीत का गायन हुआ. 'स्वर्ग में हड़ताल' नाटक पेश कर कलाकारों ने दर्शकों को काफी मनोरंजन किया. भागदौड़ की परेशानियों से घिरे पुस्तक प्रेमियों ने खुल कर हंसी का आनंद लिया. इसके बाद कव्वाली पेश की गयी. स्कूल की तीन शिक्षिका व दो शिक्षकों ने पूरी टीम का नेतृत्व किया. इनमें शिक्षिका प्राप्ति बोस, बबलू प्रमाणिक, वीतिका बनर्जी, मीनू सिंह तथा राहुल प्रसाद शामिल थे.

गीत-संगीत, अड्डाबाजी का माहौल नहीं है मेले में

मेला परिसर में युवा पीढ़ी की अड्डाबाजी भी नहीं जम रही है. लिटिल मैगजीन उड़ान के सामने गिनती के कुछ युवक-युवतियां जमा होती है. गिटार की धुन पर रवीन्द्र संगीत व आधुनिक गीतों का सामूहिक गायन होता है. शुरू में उत्साह ज्यादा होता है, लेकिन धीरे-धीरे उत्साह ठंडा पड़ने लगता है. इसमें शामिल एक युवक ने बताया कि संस्था पूरे वर्ष कुछ न कुछ करती रहती है. पुस्तक में आनंद का माहौल रहता है. अपने साथियों के साथ मिल कर अड्डा मारना, गीत गाना तथा दुःखों को भूल कर समाज को आत्मसात करना अच्छा लगता है. हालांकि उसने स्वीकार किया कि पहले जैसा उत्साह युवक-युवतियों में नहीं दिख रहा है. संस्कृति व सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति आकर्षण घट रहा है. पास ही इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोशिएशन (इप्टा) का स्टॉल है. लेकिन उसके सामने भी गिनती के ही लोग जमा रहते हैं. गीत-संगीत के प्रति कोई लगाव नहीं है. युवा पीढ़ी बैंड के प्रति उदासीन होती जा रही है. कुछ युवक-युवतियां सेल्फी लेने में ही व्यस्त थीं.

मेले में अपेक्षा से कम आ रहे पुस्तक प्रेमी

स्थानीय पोलो ग्राउंड में चल रहे पुस्तक मेले में पुस्तक प्रेमियों की भीड़ अपेक्षा से कम उमड़ रही है. सोमवार को मेले में लगे विभिन्न स्टॉलों में पुस्तक प्रेमी कम संख्या में दिखे. सबसे बड़ी कमी युवा पीढ़ी की दिख रही है. मेले को लेकर युवक-युवतियों में कोई खास उत्साह नहीं दिख रहा है. यहां तक कि प्रोफेशनल पुस्तकों की स्टॉलों पर भी उनकी उपस्थिति कम दिख रही है. पिछले आयोजनों में बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स मेला में आते थे. विभिन्न स्टॉलों में जाकर विभिन्न लेखकों की पुस्तकों की जानकारी लेते थे. कोई पुस्तक पसंद आ गयी तो उसकी खरीदारी भी कर लेते थे. लेकिन मेला आयोजन के चौथे दिन भी वह उत्साह नहीं दिख रहा है. धार्मिक पुस्तकों के स्टॉलों पर ग्राहकों की भीड़ दिख रही है. शनिवार व रविवार को छुट्टी का दिन होने के बाद भी पुस्तक प्रेमियों की संख्या क्रमशः चार हजार व सात हजार रही.

समाज में बनी रहेगी लिटिल मैग्जिनों की प्रासंगिकता

तमाम सीमावद्धताओं के बावजूद लिटिल मैगजीनों का अपनी प्रासंगिकता बनी रहेगी, क्योंकि यह आम जनता की भावनाओं को प्रतिविंबित करती है. मेले में लिटिल मैगजीनों के लिए 18 स्टॉल आवंटित किये गये है. इनके लिए अलग-अलग दो स्थानों पर स्थायी टेबल की व्यवस्था मेला कमेटी के स्तर से कर दी गयी है. लिटिल मैगजीन 'उद्योग' के स्टॉल का संचालन कर रही शिप्रा चक्रवर्ती व सुदीप्ता पाल ने कहा कि पेशेवर प्रकाशनों से अलग लिटिल मैगजीन का अपना महत्व है. बंगाल में इसका इतिहास काफी पुराना रहा है. स्वतंत्रता की लड़ाई में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी. इस सचेतन समाज में हजारों की संख्या में ऐसे लोग हैं जो विभिन्न मुद्दों व विषयों पर अपनी राय रखना चाहते हैं. लेकिन सभी को पेशेवर प्रकाशन नहीं मिलते. इस स्थिति में लिटिल मैगजीन के रूप में उनकी भावनाएं सामने आती है. पुस्तक मेला में इन मैगजीनों को व्यापक आयाम मिलता है. भले ही उनकी बिक्री अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन अधिक से अधिक पाठकों से जुड़ने का मौका मिलता है. उन्होंने कहा कि पिछले 15 वर्षो से वे इस पत्रिका का प्रकाशन कर रही हैं. इस पत्रिका को कुछ स्थायी पाठक मिले हैं. यह उत्साहबर्धक है. यह सच है कि ई-पुस्तक, ई-लिटिल मैगजीन पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ने से इन मैगजीनों के प्रति आकर्षण घट रहा है, लेकिन पाठक तो बढ़ रहे हैं. पठनीयता बढ़ी है. उन्होंने कहा कि इनके माध्यम से समान विचार के लोगों को एकजुट होने और अपने विचारों के प्रचार -प्रसार का भी मौका मिलता है.